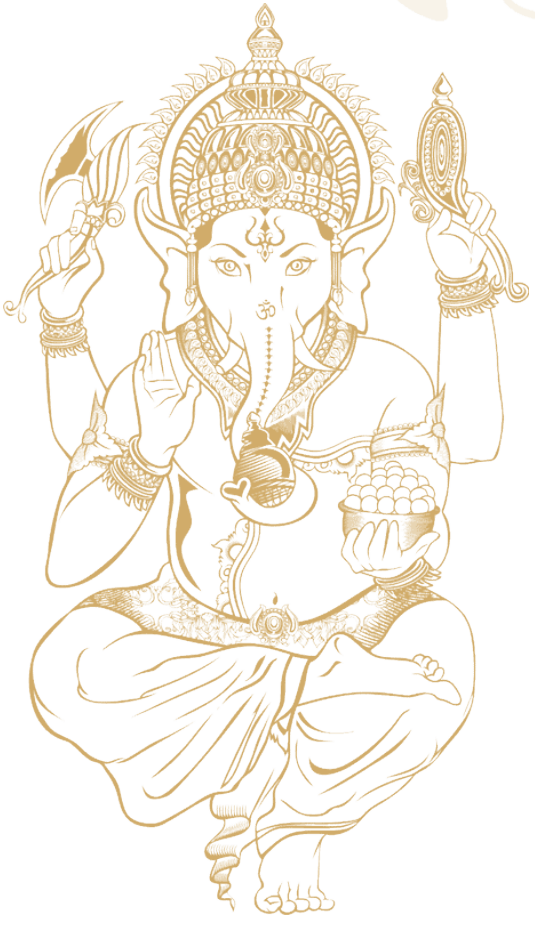

Mr. Shriyank

Ms.amrita maithil

Model: Web-FreeMatching

Order No: 120513403

पुल्लिंग	लिंग	स्त्रीलिंग
24/03/1995	जन्म तिथि	18/05/1996
शुक्रवार	दिन	शनिवार
घंटे 17:17:00	जन्म समय	06:20:50 घंटे
घटी 27:49:40	जन्म समय(घटी)	02:20:13 घटी
India	देश	India
Katni	स्थान	Raisen
23:47:00 उत्तर	अक्षांश	23:21:00 उत्तर
80:29:00 पूर्व	रेखांश	77:49:00 पूर्व
82:30:00 पूर्व	मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
घंटे -00:08:04	स्थानिक संस्कार	-00:18:44 घंटे
घंटे 00:00:00	ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
06:09:07	सूर्योदय	05:36:10
18:20:20	सूर्यास्त	18:54:28
23:47:36	चित्रपक्षीय अयनांश	23:48:27

विंशोत्तरी		अंश	राशि	ग्रह	राशि	अंश	विंशोत्तरी	
शुक्र 12वर्ष 10मा 24दि		25:53:37	सिंह	लग्न	वृष	14:20:28	सूर्य 0वर्ष 0मा 21दि	
मंगल		09:34:42	मीन	सूर्य	वृष	03:33:48	राहु	
16/02/2024		18:03:57	धनु	चंद्र	वृष	09:52:04	09/06/2013	
16/02/2031		19:22:20	कर्क व	मंगल	मेष	17:35:04	09/06/2031	
मंगल	15/07/2024	20:53:53	कुंभ	बुध व	मेष	28:56:55	राहु	20/02/2016
राहु	02/08/2025	21:29:21	वृश्चि	गुरु व	धनु	23:34:01	गुरु	16/07/2018
गुरु	09/07/2026	01:45:16	कुंभ	शुक्र	मिथु	04:23:42	शनि	21/05/2021
शनि	18/08/2027	23:27:44	कुंभ	शनि	मीन	10:34:42	बुध	09/12/2023
बुध	14/08/2028	12:16:05	तुला व	राहु व	कन्या	22:45:59	केतु	26/12/2024
केतु	10/01/2029	12:16:05	मेष व	केतु व	मीन	22:45:59	शुक्र	27/12/2027
शुक्र	12/03/2030	05:57:40	मक	हर्ष व	मक	10:44:29	सूर्य	20/11/2028
सूर्य	18/07/2030	01:25:58	मक	नेप व	मक	03:51:13	चन्द्र	22/05/2030
चन्द्र	16/02/2031	06:41:39	वृश्चि व	प्लूटो व	वृश्चि	08:03:32	मंगल	09/06/2031

लग्न-चलित

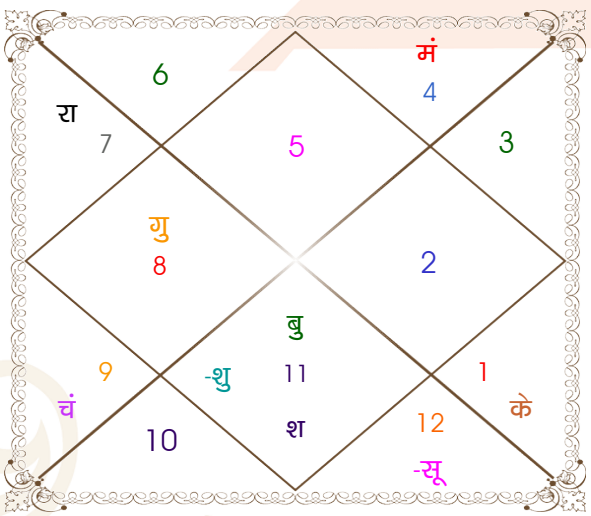

लग्न-चलित

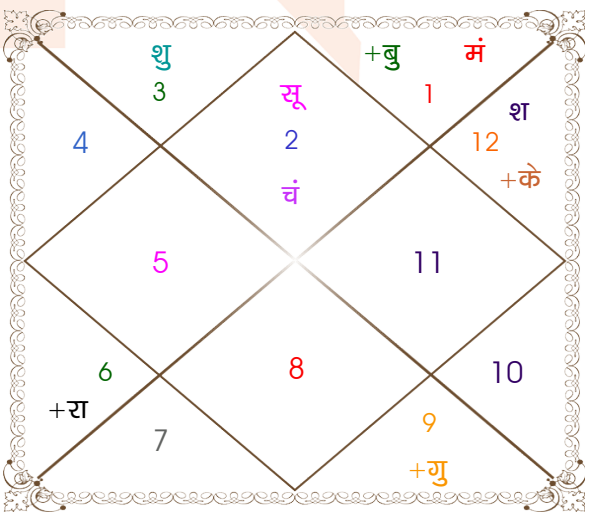

अष्टकूट गुण सारिणी

कूट	वर	कन्या	अंक	प्राप्त	दोष	क्षेत्र
वर्ण	क्षत्रिय	वैश्य	1	1.00	--	जातीय कर्म
वश्य	चतुष्पाद	चतुष्पाद	2	2.00	--	स्वभाव
तारा	अतिमित्र	सम्पत	3	3.00	--	भाग्य
योनि	वानर	मेष	4	0.00	--	यौन विचार
मैत्री	गुरु	शुक्र	5	0.50	--	आपसी सम्बन्ध
गण	मनुष्य	राक्षस	6	0.00	हाँ	सामाजिकता
भकूट	धनु	वृष	7	0.00	हाँ	जीवन शैली
नाड़ी	मध्य	अन्त्य	8	8.00	--	स्वास्थ्य/संतान
कुल :			36	14.50		

गणदोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों मे मित्रता नहीं है।

भकूट दोष कष्टदायक है क्योंकि दोनों के राशि स्वामियों में मित्रता नहीं है।

डतण्ौतपलंदा का वर्ग सर्प है तथा डेण्ंउतपजं उंपजीपस का वर्ग गरूड़ है। इन दोनों वर्गों में परस्पर शत्रुता है।

अष्टकूट मिलान के अनुसार डतण्ौतपलंदा और डेण्ंउतपजं उंपजीपस का मिलान ठीक नहीं है।

मंगलीक दोष मिलान

डतण्ौतपलंदा मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

यदि वर या कन्या की कुंडली में द्वादश भाव में धनु, मेष तथा कर्क राशि का मंगल स्थित हो तब मंगली दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि मंगल डतण्ौतपलंदा कि कुण्डली में द्वादश भाव में कर्क राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

भौमेः वक्रिणि नीचगृहे वाऽर्कस्थेऽपि वा न कुजदोषः।

अर्थात् यदि मंगल वक्री, नीच, अस्त का हो तो मंगल दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डतण्ौतपलंदा कि कुण्डली में नीच का है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

डेण्ंउतपजं उंपजीपस मंगलीक है क्योंकि मंगल लग्न कुण्डली में द्वादश भाव में स्थित है।

व्यये च कुजदोषः कन्यामिथुनयोरविना।

द्वादशे भौमदोषस्तु वृषतौलिकयोरविना।।

अर्थात् व्यय भाव में यदि मंगल बुध तथा शुक्र की राशियों में स्थित हो तो भौम दोष नहीं होता है।

क्योंकि मंगल डेण्उतपजं उंपजीपस कि कुण्डली में द्वादश भाव में मेष राशि में स्थित है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

तनुधनुमदमायुर्लाभ व्ययगः कुजस्तु दाम्पत्यम्।
विघटयति तद् गृहेशो न विघटयति तुंगमित्रगेहेवा।।

यदि मंगल स्व राशि अथवा उच्च का हो तो मंगली दोष भंग हो जाता है।

क्योंकि मंगल डेण्उतपजं उंपजीपस कि कुण्डली में स्वराशि में है अतः मंगलीक दोष प्रभावहीन हो जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि शनि डेण्उतपजं उंपजीपस कि कुण्डली में एकादश भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

त्रिषट् एकादशे राहू त्रिषट् एकादशे शनिः।
त्रिषट् एकादशे भौमः सर्वदोषविनाशकृत्।।

वर या कन्या की कुंडली में से एक मंगलीक हो और दूसरे की कुंडली में 3,6,11 वें भावों में राहु, मंगल या शनि हो तो मंगलीक दोष समाप्त हो जाता है।

क्योंकि राहु डतण्ैतपलंदा कि कुण्डली में तृतीय भाव में स्थित है अतः मंगलीक दोष कट जाता है।

डतण्ैतपलंदा तथा डेण्उतपजं उंपजीपस में मंगलीक मिलान ठीक है।

निष्कर्ष

मिलान ठीक नहीं है क्योंकि अष्टकूट गुण नहीं मिलते हैं।